SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

कक्षा - 10

भारत और समकालीन विश्व - 2

अध्याय - 2

भारत में राष्ट्रवाद

भाग - 1

Pritesh Joshi

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

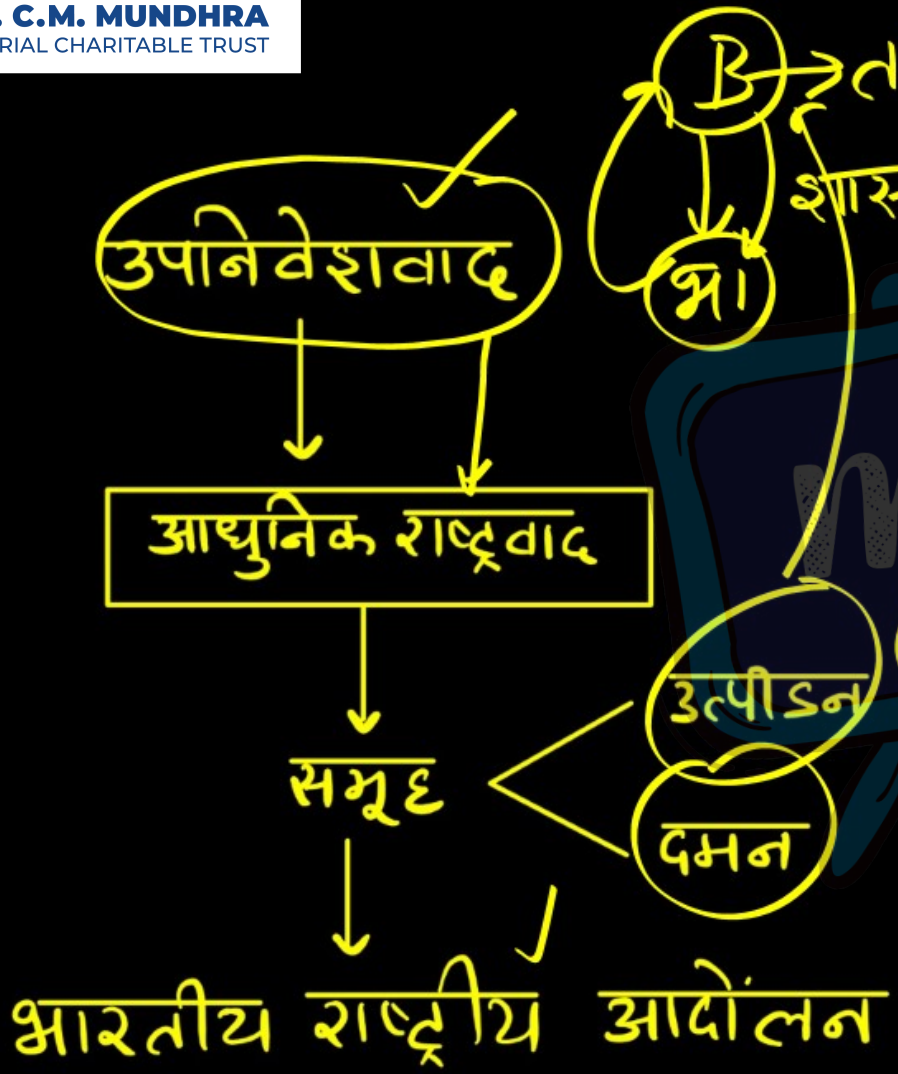

भारत में राष्ट्रवाद

- भारत में भी आधुनिक राष्ट्रवाद के उदय की परिघटना उपनिवेशवाद विरोधी आंदोलन के साथ गहरे तौर पर जुड़ी हुई थी।
- औपनिवेशिक शासकों के ख़िलाफ संघर्ष के दौरान लोग आपसी एकता को पहचानने लगे थे।
- उत्पीड़न और दमन के साझा भाव ने विभिन्न समूहों को एक-दूसरे से बाँध दिया था।
- लेकिन हर वर्ग और समूह पर उपनिवेशवाद का असर एक जैसा नहीं था। उनके अनुभव भी अलग थे और स्वतंत्रता के मायने भी भिन्न थे।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



- महात्मा गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस ने इन समूहों को इकट्ठा करके एक विशाल आंदोलन खड़ा किया।
- परंतु इस एकता में टकराव के बिंदु भी निहित थे।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

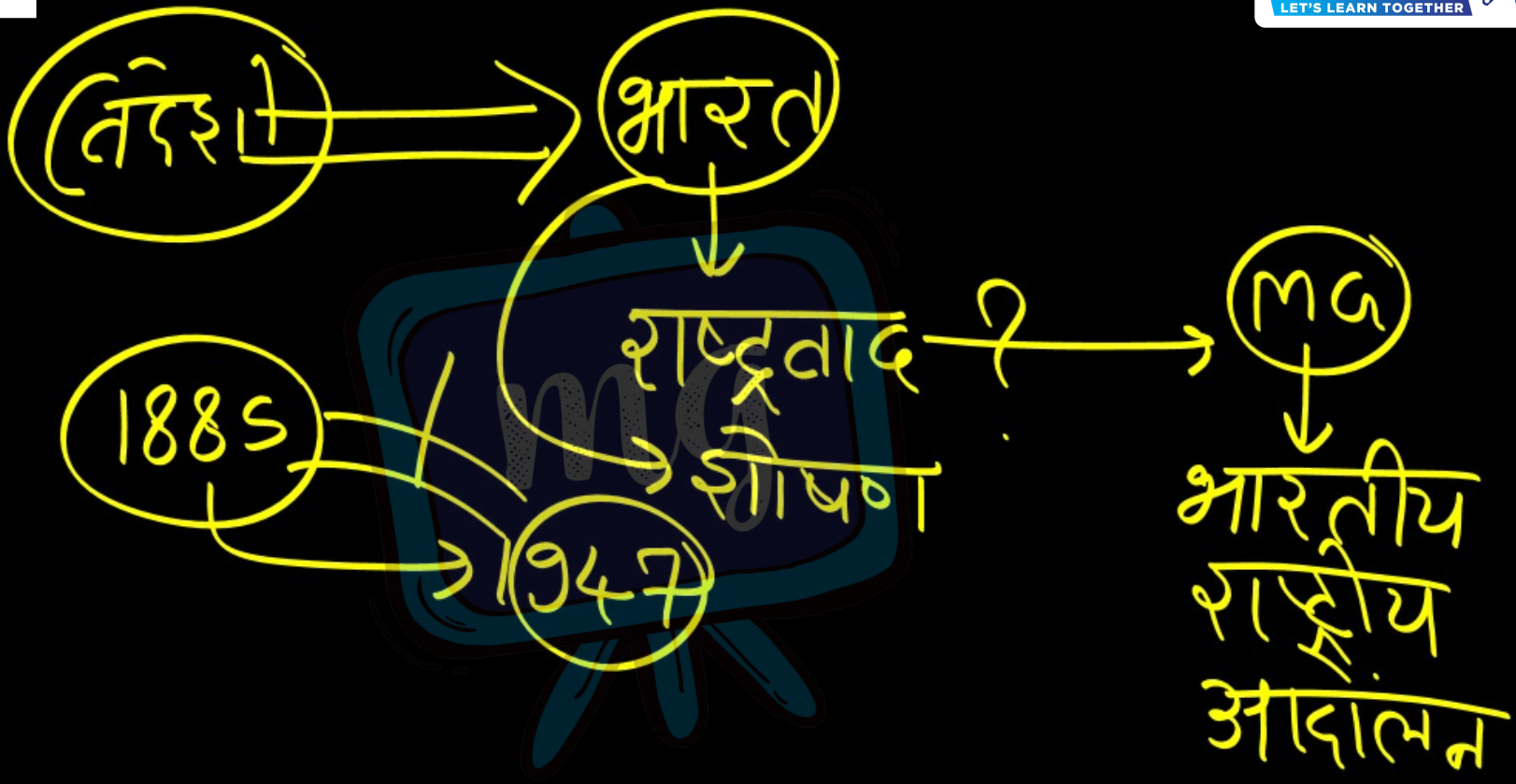

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

1914 - 1918



केन्द्रीय || मित्र

प्रथम विश्वयुद्ध के बाद

- 1919 से बाद के सालों में राष्ट्रीय आंदोलन नए इलाकों तक फैल गया था।
- इसमें नए सामाजिक समूह शामिल हो गए थे और संघर्ष की नयी पद्धतियाँ सामने आ रही थीं।

प्रथम विश्व युद्ध का प्रभाव :-

- विश्वयुद्ध ने एक नयी आर्थिक और राजनीतिक स्थिति पैदा कर दी थी।
- इसके कारण रक्षा व्यय बहुत बढ़ गया था।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



- इस खर्चे की भरपाई करने के लिए युद्ध के नाम पर क़र्ज़े लिए गए और करों में वृद्धि की गई।
- सीमा शुल्क बढ़ा दिया गया और आयकर शुरू किया गया।
- युद्ध के दौरान 1913 से 1918 के बीच कीमतें भी बढ़कर दोगुना हो चुकी थीं जिससे आम लोगों की मुश्किलें बढ़ गई थीं।
- गाँवों में सिपाहियों को जबरन भर्ती किया गया जिसके कारण ग्रामीण इलाकों में व्यापक गुस्सा था।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



- 1918–19 तथा 1920–21 में देश के बहुत सारे हिस्सों में फ़सल खराब हो गई जिसके कारण खाद्य पदार्थों का भारी अभाव पैदा हो गया।
- इसी समय फ़्लू की महामारी फैल गई।
- 1921 की जनगणना के मुताबिक़ दुर्भिक्ष और महामारी के कारण 120–130 लाख लोग मारे गए।
- लोगों को उम्मीद थी कि युद्ध खत्म होने के बाद उनकी मुसीबतें कम हो जाएँगी। लेकिन ऐसा नहीं हुआ।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

विश्व युद्ध I

1914 - 1918

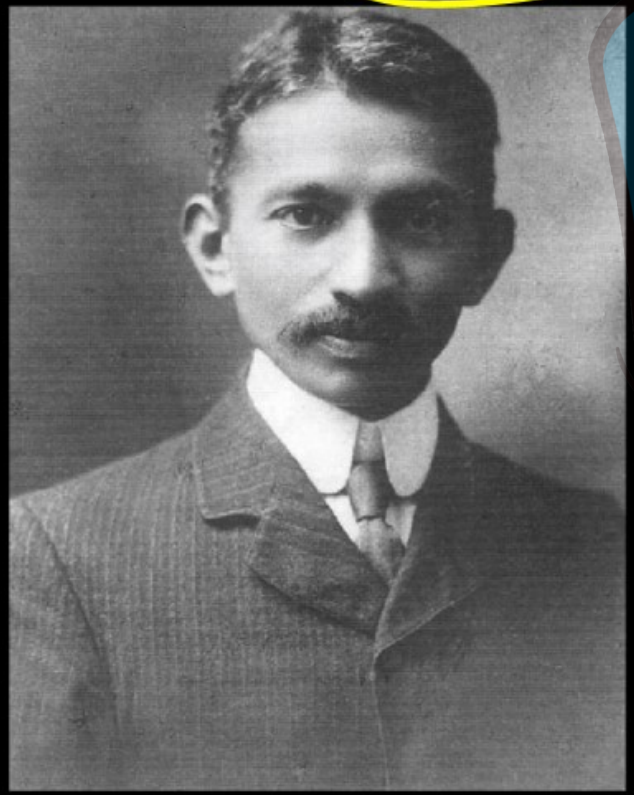

रक्षा व्यय ↑

- कर
- सीमा शुल्क
- आयकर

महंगाई

- 1913 - 1918
  कीमत 2 x
- 1918 - 1921
  फसल खराब
  फ्लू फैल गया

लगान 30

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

९ जनवरी १९१५ → १९१५

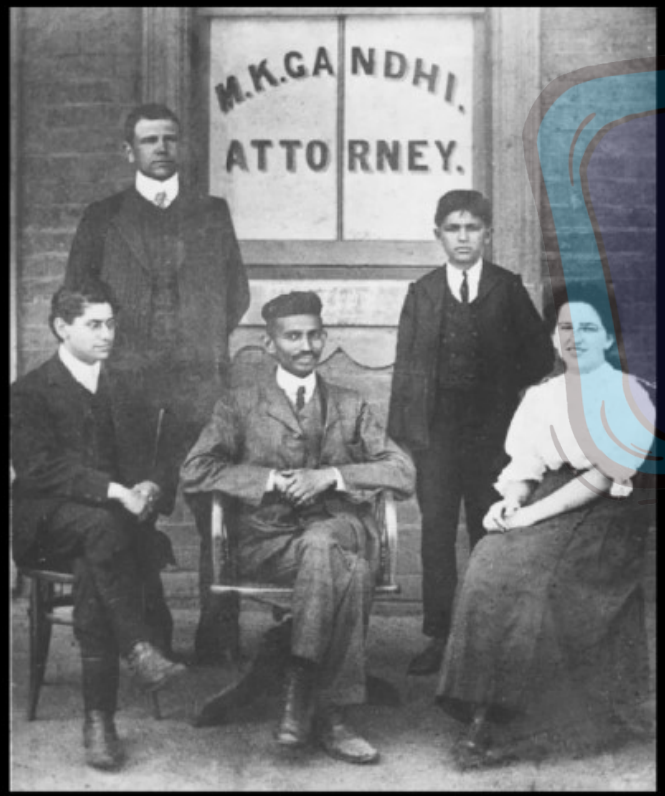

- इसी समय एक नया नेता सामने आया और उसने संघर्ष का एक नया ढंग, एक नया तरीका पेश किया।

९ जनवरी

सत्याग्रह का विचार :-

- महात्मा गांधी जनवरी 1915 में भारत लौटे।
- इससे पहले वे दक्षिण अफ्रीका में थे।
- उन्होंने एक नए तरह के जनआंदोलन के रास्ते पर चलते हुए वहाँ की नस्लभेदी सरकार से सफलतापूर्वक लोहा लिया था।
- इस पद्धति को वे सत्याग्रह कहते थे।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q. भारतीयों पर प्रथम विश्व युद्ध के क्या प्रभाव पड़े?

प्रथम विश्व युद्ध

- आर्थिक
- सामाजिक

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

सत्याग्रह

सत्याग्रह

↓

सत्य के लिए आग्रह

अंतः सत्य की ही जीत होती है!

"सत्य का शक्ति पर आग्रह"

और

"सत्य की खोज पर ज़ोर दिया जाता था।"

इसका अर्थ यह था कि "अगर आपका उद्देश्य सच्चा है, यदि आपका संघर्ष अन्याय के ख़िलाफ़ है तो उत्पीडक से मुकाबला करने के लिए आपको किसी शारीरिक बल की आवश्यकता नहीं है।"

प्रतिशोध की भावना या आक्रामकता का सहारा लिए बिना सत्याग्रही केवल अहिंसा के सहारे भी अपने संघर्ष में सफल हो सकता है।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q. महात्मा गांधी के अनुसार सत्याग्रह को परिभाषित करें ?



SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER





- भारत आने के बाद गांधीजी ने कई स्थानों पर सत्याग्रह आंदोलन चलाया।
- 1917 में उन्होंने बिहार के चंपारन इलाक़े का दौरा किया और दमनकारी बागान व्यवस्था के ख़िलाफ़ किसानों को संघर्ष के लिए प्रेरित किया।
- 1917 में उन्होंने गुजरात के खेड़ा जिले के किसानों की मदद के लिए सत्याग्रह का आयोजन किया। फसल खराब हो जाने और प्लेग की महामारी के कारण खेड़ा जिले के किसान लगान चुकाने की हालत में नहीं थे। वे चाहते थे कि लगान वसूली में ढील दी जाए।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

1914-1918

1918 में गांधीजी सूती कपड़ा कारखानों के मज़दूरों के बीच सत्याग्रह आंदोलन चलाने अहमदाबाद जा पहुँचे।

Q. प्रथम विश्व युद्ध की शुरुआत कब हुई ?

a) 1910 b) 1914 c) 1915

d) 1921

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

1915 → भारत → 1916-17 चम्पारन नील सत्याग्रह

1917 खेडा → राजस्व

1918 → अहमदाबाद मजदूर।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q. प्रथम विश्व युद्ध के बाद भारतीय राजनीतिक व आर्थिक स्थिति पर क्या प्रभाव पड़े?

Q. गांधीजी के अनुसार सत्याग्रह की नीति क्या है?

Q. चर्चा कीजिए :-

1) 1917 - चम्पारन सत्याग्रह

2) 1917 - खेड़ा आंदोलन

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

बिन। अपील बिन। दलील
बिना वकील

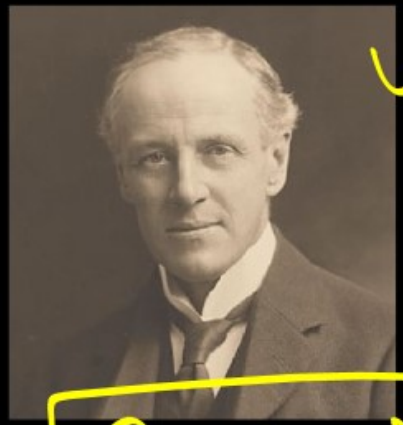

सिडनी रॉलेट

एक्ट

रॉलट एक्ट

क्या – गांधीजी ने 1919 में रॉलट एक्ट के ख़िलाफ़ एक राष्ट्रव्यापी सत्याग्रह आंदोलन चलाने का फ़ैसला लिया।

कैसे – भारतीय सदस्यों के भारी विरोध के बावजूद इस कानून को इम्पीरियल लेजिस्लेटिव काउंसिल ने बहुत जल्दबाजी में पारित कर दिया था।

क्यों – इस कानून के ज़रिए सरकार को राजनीतिक गतिविधियों को कुचलने और राजनीतिक कैदियों को 2 साल तक बिना मुक़दमा चलाए जेल में बंद रखने का अधिकार मिल गया था।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

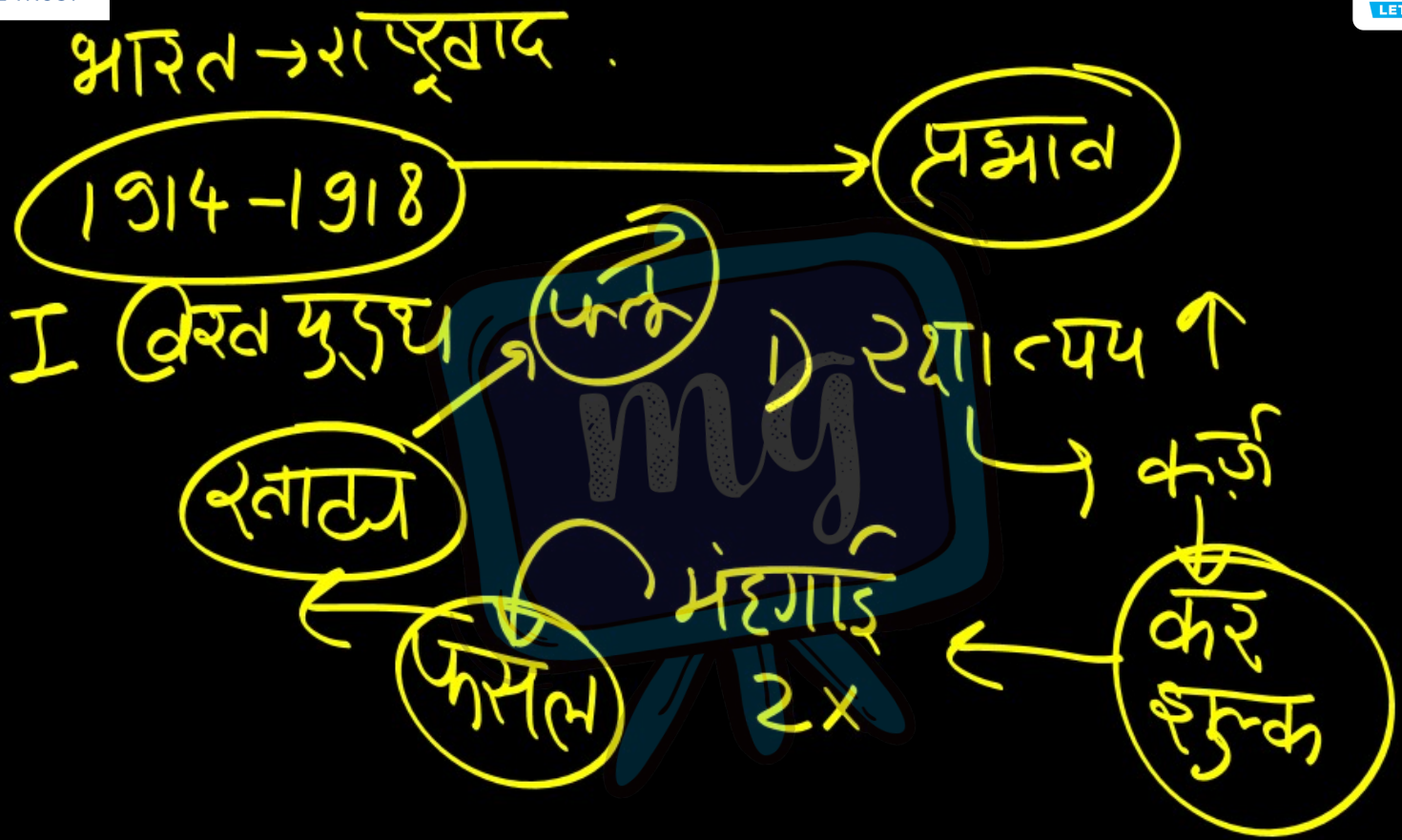

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

कक्षा-10

द्विघात समीकरण

Quadratic Equations

अध्याय - 4

भाग - 3

प्रश्नावली 4.2

By : Rajendra Yadav Sir

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

प्रश्नावली 4.2

1. गुणनखंड विधि से निम्न द्विघात समीकरणों के मूल ज्ञात कीजिए:

(i) $x^2 - 3x - 10 = 0$

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

प्रश्नावली 4.2

(ii) $2x^2 + x - 6 = 0$



SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

प्रश्नावली 4.2

1. गुणनखंड विधि से निम्न द्विघात समीकरणों के मूल ज्ञात कीजिए:



SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

प्रश्नावली 4.2

(iii) $\sqrt{2}x^2 + 7x + 5\sqrt{2} = 0$



SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

प्रश्नावली 4.2

(iv) $2x^2 - x + \frac{1}{8} = 0$

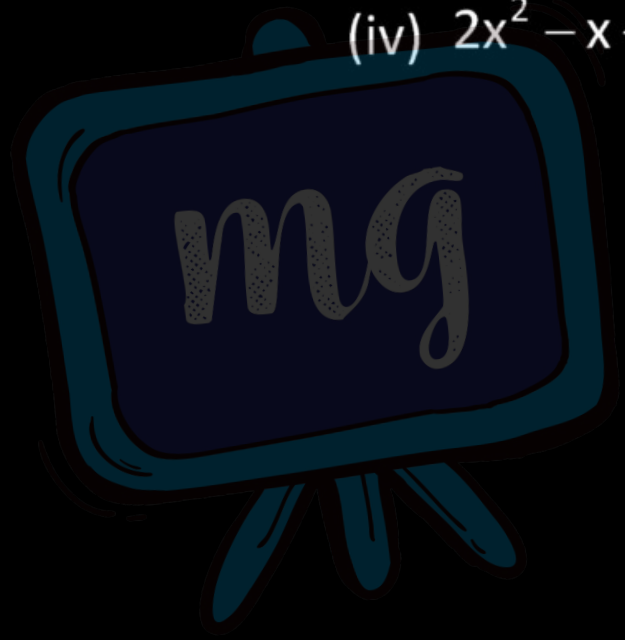

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

प्रश्नावली 4.2

(v) $100x^2 - 20x + 1 = 0$



SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

प्रश्नावली 4.2

2. उदाहरण 1 में दी गई समस्याओं को हल कीजिए।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

प्रश्नावली 4.2

उदाहरण 1. निम्न स्थितियों को गणितीय रूप में व्यक्त कीजिए :

(i) जॉन और जीवंती दोनों के पास कुल मिलाकर 45 कंचे हैं। दोनों पाँच-पाँच कंचे खो देते हैं और अब उनके पास कंचों की संख्या का गुणनफल 124 है। हम जानना चाहेंगे कि आरंभ में उनके पास कितने-कितने कंचे थे।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

प्रश्नावली 4.2

(ii) एक कुटीर उद्योग एक दिन में कुछ खिलौने निर्मित करता है। प्रत्येक खिलौने का मूल्य (₹ में) 55 में से एक दिन में निर्माण किए गए खिलौने की संख्या को घटाने से प्राप्त संख्या के बराबर है। किसी एक दिन, कुल निर्माण लागत ₹ 750 थी। हम उस दिन निर्माण किए गए खिलौनों की संख्या ज्ञात करना चाहेंगे।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

प्रश्नावली 4.2

3. ऐसी दो संख्याएँ ज्ञात कीजिए, जिनका योग 27 हो और गुणनफल 182 हो।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

प्रश्नावली 4.2

4. दो क्रमागत धनात्मक पूर्णांक ज्ञात कीजिए जिनके वर्गों का योग 365 हो।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

प्रश्नावली 4.2

5. एक समकोण त्रिभुज की ऊँचाई इसके आधार से 7 cm कम है। यदि कर्ण 13 cm का हो, तो अन्य दो भुजाएँ ज्ञात कीजिए।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

प्रश्नावली 4.2

6. एक कुटीर उद्योग एक दिन में कुछ बर्तनों का निर्माण करता है। एक विशेष दिन यह देखा गया कि प्रत्येक नग की निर्माण लागत (₹ में) उस दिन के निर्माण किए बर्तनों की संख्या के दुगुने से 3 अधिक थी। यदि उस दिन की कुल निर्माण लागत ₹ 90 थी, तो निर्मित बर्तनों की संख्या और प्रत्येक नग की लागत ज्ञात कीजिए।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

6 अप्रेल 1919

- रैली - जुलूस
- रेलवे वर्कशॉप (हड़ताल)
- राष्ट्रवादियो का दमन

10 अप्रेल 1919

- शांतिपूर्ण जुलूस पर गोली

↓

माईकल लॉ - लागू

↓

जनरल डायर को कमान

10 अप्रैल, 1919

- 10 अप्रैल, 1919 को पुलिस ने अमृतसर में एक शांतिपूर्ण जुलूस पर गोली चला दी। इसके बाद लोग बैंकों, डाकखानों और रेलवे स्टेशनों पर हमले करने लगे।
- मार्शल लॉ लागू कर दिया गया और जनरल डायर ने कमान सँभाल ली।

13 अप्रैल, 1919

- 13 अप्रैल को जलियाँवाला बाग़ हत्याकांड हुआ।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

13 अप्रैल, 1919

- 13 अप्रैल को जलियाँवाला बाग़ हत्याकांड हुआ।



- उस दिन अमृतसर में बहुत सारे गाँव वाले सालाना वैसाखी मेले में शिरकत करने के लिए जलियाँवाला बाग़ मैदान में जमा हुए थे।
- काफी लोग तो सरकार द्वारा लागू किए गए दमनकारी कानून का विरोध प्रकट करने के लिए एकत्रित हुए।
- यह मैदान चारों तरफ़ से बंद था।
- शहर से बाहर होने के कारण वहाँ जुटे लोगों को यह पता नहीं था कि इलाक़े में मार्शल लॉ लागू किया जा चुका है।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

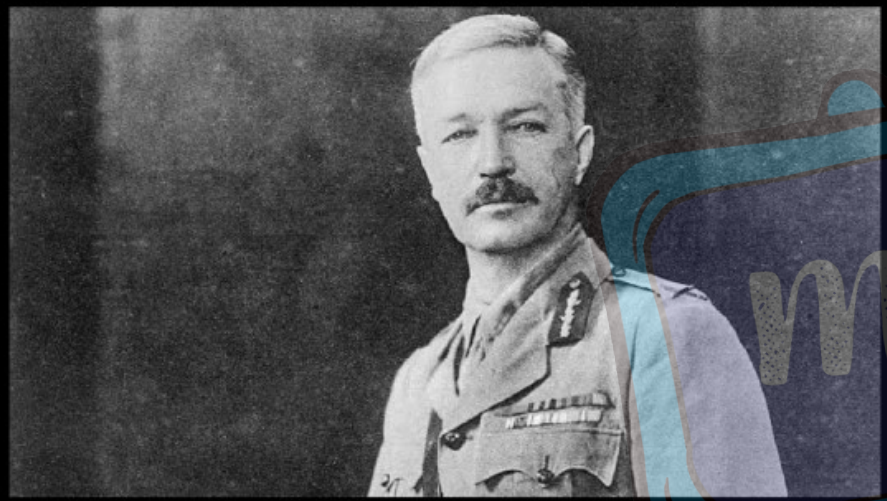

- जनरल डायर हथियारबंद सैनिकों के साथ वहाँ पहुँचा और जाते ही उसने मैदान से बाहर निकलने के सारे रास्तों को बंद करवा दिया तथा उसके सिपाहियों ने भीड़ पर अंधाधुंध गोलियाँ चला दीं। जिसमें सैंकड़ों लोग मारे गए।
- बाद में उसने बताया कि इस प्रकार से वह – सत्याग्रहियों के ज़हन में विस्मय और दहशत का 'एक नैतिक प्रभाव' उत्पन्न करना चाहता था।

13 अप्रैल, 1919 के बाद :-

- जलियाँवाला बाग़ की खबर फैली, उत्तर भारत के बहुत सारे शहरों में लोग सड़कों पर उतरने लगे।
- लोग सरकारी इमारतों पर हमला करने लगे।
- सरकार ने इन कार्रवाइयों को निर्ममता से कुचला ।
- सरकार ने लोगों को अपमानित और आतंकित किया।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- सत्याग्रहियों को ज़मीन पर नाक रगड़ने के लिए, सड़क पर घिसट कर चलने और सारे साहिबों को सलाम मारने के लिए मजबूर किया गया।
- लोगों को कोड़े मारे गए और गाँवों (गुजराँवाला, पंजाब) पर बम बरसाए गए।



जनरल डायर के हुक्म से सिपाही लोगों को घिसट कर चलने के लिए मजबूर कर रहे हैं।

- हिंसा फैलते देख महात्मा गांधी ने आंदोलन वापस ले लिया।
- इस प्रकार रॉलेट एक्ट के खिलाफ किया गया सत्याग्रह आंदोलन समाप्त हो गया।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

कक्षा - 10

भारत और समकालीन विश्व - 2

अध्याय - 2

भारत में राष्ट्रवाद

भाग - 3

Pritesh Joshi

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

रौलट सत्याग्रह → इद्दर, कस्बो तक सीमित :



एक बड़ा आंदोलन करना पड़ेगा !

खिलाफत मुद्दा

(हिन्दू + मुस्लिम) एक हो सकें

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

खिलाफत मुद्दा

प्रथम विश्व युद्ध = ओटोमन साम्राज्य का पतन



↓

खलीफा के पद को समाप्त

↓

1919 - बम्बई - खिलाफत कमेटी

गाँधी जी

कलकत्ता अधिवेशन

खिलाफत

↓

असहयोग

mg

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

खिलाफत आंदोलन

- प्रथम विश्वयुद्ध में ऑटोमन-तुर्की की हार हो चुकी थी।
- यह अफ़वाहें फैली हुई थीं कि इस्लामिक विश्व के आध्यात्मिक नेता (ख़लीफ़ा) ऑटोमन सम्राट पर एक बहुत सख्त शांति संधि थोपी जाएगी।
- ख़लीफ़ा की शक्तियों की रक्षा के लिए मार्च 1919 में बंबई में एक ख़िलाफ़त समिति का गठन किया गया था।

Q. खिलाफत आंदोलन से आप क्या समझते हैं?

- मोहम्मद अली और शौकत अली बंधुओं के साथ-साथ कई मुस्लिम नेताओं ने इस मुद्दे पर संयुक्त जनकार्यवाही की संभावना तलाशने के लिए महात्मा गांधी के साथ चर्चा शुरू कर दी थी।
- सितंबर 1920 में कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में महात्मा गांधी ने दूसरे नेताओं को इस बात पर राज़ी कर लिया कि ख़िलाफ़त आंदोलन तथा स्वराज दोनों के लिए एक असहयोग आंदोलन शुरू किया जाना चाहिए।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

असहयोग आंदोलन → सरकार के प्रति असहयोग।



चरण

I
- सरकार की पदवियां लौटाई गई
- सरकारी नौकरी
- विदेशी वस्तुओं
- पुलिस, सेना का बहिष्कार

II
यदि सरकार दमन
↓
सविनय अवज्ञा

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

कांग्रेस मे मतभेद ⟶ चुनाव मे भाग
+ हिंसा का भय



1920 नागपुर अधिवेशन समझौता

असहयोग कार्यक्रम पर स्वीकृति

जनवरी 1921 आंदोलन शुरू

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

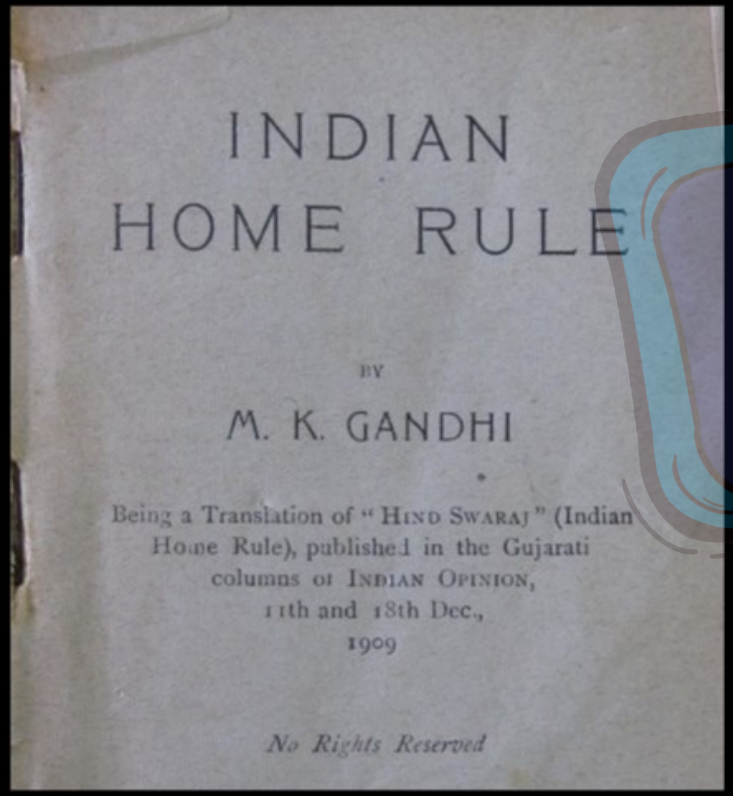

असहयोग ही क्यों?

- गांधी जी ने असहयोग आंदोलन का रास्ता क्यों चुना?
- अपनी पुस्तक हिन्द स्वराज (1909) में गांधी जी ने कहा था कि – भारत में ब्रिटिश शासन भारतीयों के सहयोग से ही स्थापित हुआ था तथा यह शासन इसी सहयोग से चल रहा था। अगर भारत के लोग अपना सहयोग वापस ले लें तो साल भर के भीतर ही ब्रिटिश शासन ढह जायेगा और स्वराज की स्थापना हो जायेगी।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



- गांधी जी का सुझाव था कि आंदोलन चरणबद्ध तरीके से आगे बढ़ना चाहिए।

प्रथम चरण :-

- लोगों को सरकार द्वारा दी गई पदवियाँ लौटा देनी चाहिए।
- सरकारी नौकरियों, सेना, पुलिस, अदालतों, विधायी परिषदों, स्कूलों और विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करना चाहिए।

दूसरा चरण :-

- यदि सरकार दमन का रास्ता अपनाती हैं तो व्यापक सविनय अवज्ञा आंदोलन भी शुरू किया जाये।
- 1920 की गर्मियों में गांधी जी और शौकत अली आंदोलन के लिए समर्थन जुटाते हुए देश भर में यात्राऐं करते रहे।
- कांग्रेस के बहुत सारे लोग प्रथम चरण में लिये गये असहयोग के प्रस्तावों से सशंकित थे।
- वे नवम्बर 1920 में विधायी परिषद के लिए होने वाले चुनावों का बहिष्कार करने से हिचकिचा रहे थे।



- उन्हें यह भी डर था कि इस आंदोलन में लोग हिंसा कर सकते हैं।
- सितम्बर से दिसम्बर तक कांग्रेस में भारी खींचतान चलती रही।
- कुछ समय तक ऐसा लगा कि आंदोलन के समर्थकों और विरोधियों के बीच सहमति नहीं बन पायेगी।
- आखिरकार दिसम्बर - 1920 में कांग्रेस के नागपुर अधिवेशन में एक समझौता हुआ और असहयोग कार्यक्रम पर स्वीकृति की मोहर लगा दी गयी।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



आंदोलन के भीतर अलग-अलग धाराऐं :-

- असहयोग खिलाफत आंदोलन जनवरी 1921 में शुरू हुआ।
- इस आंदोलन में विभिन्न सामाजिक समूहों ने भाग लिया क्योंकि हरेक की अपनी-अपनी आकांक्षाऐं थी।
- सभी के लिए स्वराज के अर्थ भी अलग अलग थे।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

शहरों में आंदोलन :-

- आंदोलन की शुरूआत शहरी मध्यवर्ग की हिस्सेदारी के साथ हुई।
- हजारों विद्यार्थियों में स्कूल-कॉलेज छोड़ दिये।
- हैडमास्टरों और शिक्षकों ने इस्तीफे सौंप दिये।
- वकीलों ने मुकदमें लड़ना बंद कर दिया।
- मद्रास के अलावा ज्यादातर प्रांतों में परिषद चुनावों का बहिष्कार किया गया।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

आर्थिक असहयोग

- सामानों का बहिष्कार
- दुकानों की पिकेटिंग
- कपड़ों की होली

- मद्रास में गैर ब्राह्मणों द्वारा बनाई गई जस्टिस पार्टी का मानना था कि काउंसिल में प्रवेश के जरिए उन्हें वे अधिकार मिल सकते हैं जो सामान्य रूप से केवल ब्राह्मणों को मिल पाते हैं, इसलिए इस पार्टी ने चुनावों का बहिष्कार नहीं किया।
- आर्थिक मोर्चे पर असहयोग का असर और भी ज्यादा नाटकीय रहा।

1. विदेशी सामानों का बहिष्कार किया गया।
2. शराब की दुकानों की पिकेटिंग की गई।

पिकेटिंग :- विरोध करते हुए दफ्तर व दुकानों में अंदर जाने का रास्ता रोक लेते हैं।

3. विदेशी कपड़ों की होली जलाई जाने लगी।

- 1921–22 के बीच विदेशी कपड़ों का आयात आधा रह गया था। जो 102 करोड़ से घटकर 57 करोड़ रह गया।
- बहुत सारे व्यापारियों ने विदेशी चीजों का व्यापार करने तथा विदेशी व्यापार में पैसा लगाने से इंकार कर दिया।
- बहिष्कार आंदोलन के फैलने से तथा भारतीय कपड़े पहनने से भारतीय कपड़ा मिलों और हथकरघों का उत्पादन भी बढ़ने लगा।

आंदोलन में कमी :-

- कुछ समय बाद शहरों में यह आंदोलन धीमा पड़ने लगा।
- ब्रिटेन की मिलों का कपड़ा यहां की खादी के कपड़े से सस्ता होता था। अत: गरीब खादी कैसे खरीदते? वे मिलों के कपडे का लम्बे समय तक बहिष्कार कैसे करते?
- ब्रिटिश संस्थानों (स्कूल, कॉलेज, कोर्ट) के बहिष्कार से भी समस्या पैदा हो गयी।
- आंदोलन तब कामयाब होता जब ब्रिटिश संस्थानों के वैकल्पिक भारतीय संस्थान की पहले ही स्थापना की जाती।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- लेकिन वैकल्पिक संस्थानों के स्थापना की प्रक्रिया बहुत धीमी थी।
- फलस्वरूप विद्यार्थी और शिक्षक सरकारी स्कूलों में लौटने लगे और वकील दोबारा सरकारी अदालतों में दिखाई देने लगे।

ग्रामीण इलाकों में विद्रोह :-

- शहरों से बढ़कर असहयोग आंदोलन देहात में भी फैल गया था।
- देश के विभिन्न भागों में चले किसानों और आदिवासियों के संघर्ष भी इस आंदोलन में समा गये।

अवध में बाबा रामचन्द्र :-

- अवध में सन्यासी बाबा रामचंद्र किसानों का नेतृत्व कर रहे थे।
- बाबा रामचन्द्र इससे पहले फिजी में गिरमिटिया मजदूर के तौर पर काम कर चुके थे।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- उनका आंदोलन तालुकदारों और जमींदारों के खिलाफ था जो किसानों से भारी-भरकम लगान और तरह-तरह के कर वसूल कर रहे थे।
- किसानों को बेगार करनी पड़ती थी।
- जमीनों पर उनका अधिकार स्थापित न हो सके इसलिए बार-बार उनकी जमीनों के पट्टे बदल दिए जाते थे।
- किसानों की मांग थी कि-

(i) लगान कम किया जाए,
(ii) बेगार खत्म हो तथा
(iii) दमनकारी जमींदारों का सामाजिक बहिष्कार किया जाये।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- इसके तहत बहुत सारे स्थानों पर जमींदारों को नाई-धोबी की सुविधाओं से भी वंचित करने के लिए पंचायतों ने फैसला किया।
- जून 1920 में जवाहर लाल नेहरू ने अवध के गांवों का दौरा किया तथा गांव वालों से बातचीत की और उनकी व्यथा समझने का प्रयास किया।
- अक्टूबर 1920 तक जवाहर लाल नेहरू, बाबा रामचन्द्र तथा कुछ अन्य लोगों के नेतृत्व में किसान सभा का गठन कर लिया गया।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- महीने भर में इस पूरे इलाके के गांवों में संगठन की 300 से ज्यादा शाखाऐं बन चुकी थीं।
- अगले साल जब असहयोग आंदोलन शुरू हुआ तो कांग्रेस ने अवध के किसान संघर्ष को इस आंदोलन में शामिल करने का प्रयास किया।
- लेकिन किसानों के आंदोलन में ऐसे स्वरूप विकसित हो चुके थे जिनसे कांग्रेस नेतृत्व खुश नहीं था।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- 1921 में जब आंदोलन फैला तो तालुकदारों और व्यापारियों के मकानों पर हमले होने लगे, बाजारों में लूटपाट होने लगी और अनाज के गोदामों पर कब्जा कर लिया गया।
- बहुत सारे स्थानों पर स्थानीय नेता किसानों को समझा रहे थे कि गांधी जी ने ऐलान कर दिया है कि अब कोई लगान नहीं भरेगा और जमीन गरीबों में बांट दी जायेगी।
- महात्मा का नाम लेकर लोग अपनी सारी कार्रवाइयों को सही ठहरा रहे थे।

आंध्र प्रदेश की गूडेम पहाड़ियों में आंदोलन:-

- 1920 के दशक में आंध्र प्रदेश की गूडेम पहाड़ियों के आदिवासी किसानों ने एक उग्र गुरिल्ला आंदोलन छेड़ दिया।
- कांग्रेस इस तरह के संघर्ष को कभी स्वीकार नहीं कर सकती थी।
- अन्य वन्य क्षेत्रों की तरह यहां भी अंग्रेजी सरकार ने जंगलों में लोगों को दाखिल होने पर पाबंदी लगा रखी थी।

- लोग इन जंगलों में न तो मवेशियों को चरा सकते थे और न ही जलाने के लिए लकड़ी तथा फल बीन सकते थे।
- इससे पहाड़ों के लोग परेशान और गुस्सा थे।
- न केवल उनकी रोजी-रोटी पर असर पड़ रहा था बल्कि उनके परंपरागत अधिकार भी छीने जा रहे थे।
- जब सरकार ने उन्हें सड़कों के निर्माण के लिए बेगार करने पर मजबूर किया तो लोगों ने बगावत कर दी।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- इनका नेतृत्व करने वाले अल्लूरी सीताराम राजू एक दिलचस्प व्यक्ति थे।
- उनका दावा था कि उनके पास बहुत सारी विशेष शक्तियां हैं –

(i) वह सटीक खगोलीय अनुमान लगा सकते हैं।

(ii) लोगों को स्वस्थ कर सकते हैं तथा गोलियां भी उन्हें नहीं मार सकतीं।

- राजू के व्यक्तित्व से चमत्कृत लोगों को लगता था कि वह ईश्वर का अवतार है।
- राजू महात्मा गांधी की महानता के गुण गाते थे।

- उनका कहना था कि वे असहयोग आंदोलन से प्रेरित हैं।
- उन्होंने लोगों को खादी पहनने तथा शराब छोड़ने के लिए प्रेरित किया।
- उनका यह भी दावा था कि भारत अहिंसा के बल पर नहीं बल्कि केवल बल प्रयोग के जरिये ही आजाद हो सकता है।
- गूडेम विद्रोहियों ने पुलिस थानों पर हमले किये, ब्रिटिश अधिकारियों को मारने की कोशिश की और स्वराज प्राप्ति के लिए गुरिल्ला युद्ध चलाते रहे।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- 1924 में राजू को फांसी दे दी गई। राजू अपने लोगों के बीच लोकनायक बन चुके थे।

बागानों में स्वराज :-

- असम के बागानी मजदूरों के लिए आजादी का मतलब यह था कि उस चारदीवारी के बाहर जा सके जिसमें उनको बंद करके रखा गया था।
- उनके लिए आजादी का मतलब यह भी था कि वे अपने गांवों से संपर्क रख सकें।

- इसका कारण यह था कि 1859 के ''इनलैण्ड इमिग्रेशन एक्ट'' के तहत उन्हें बागान से बाहर जाने की छूट नहीं थी।
- जब उन्होंने असहयोग आंदोलन के बारे में सुना तो अपने अधिकारियों की अवहेलना कर बागान छोड़ घर जाने लगे।
- उनको लगता है अब गांधी राज आ गया है इसलिए हरेक को गांव में जमीन मिल जायेगी।
- लेकिन वे अपनी मंजिल पर नहीं पहुंच पाये और रेल्वे व स्टीमरों की हड़ताल के कारण रास्ते में ही फंस गये तथा पुलिस ने उन्हें पकड़ लिया और उनकी बुरी तरह पिटाई हुई।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- इस प्रकार से असहयोग आंदोलन एक इलाके तक ही सीमित न रहकर सभी जगह फैल गया।
- अन्ततः 1922 में गोरखपुर में चौरी-चौरा में बाजार से गुजर रहे शांतिपूर्ण जुलूस तथा पुलिस के बीच हिंसक टकराव होने के कारण महात्मा गांधी ने असहयोग आंदोलन को रोकने का आह्वान किया।

कार्बन एवं उसके यौगिक

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- असंतृप्त हाइड्रोकार्बन जिनमें एक या अधिक त्रिआबंध होते है। एल्काइन कहलाते है।
- एल्काइन का सामान्य सूत्र $C_n H_{2n-2}$ होता है।

(a) संतृप्त हाइड्रोकार्बन यौगिकों के सूत्र व संरचनाएँ

कार्बन परमाणु	नाम	सूत्र	संरचना
1.	मेथेन	CH_4	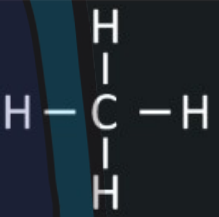
2.	एथेन	C_2H_6	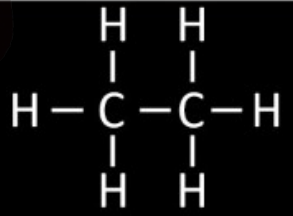
3.	प्रोपेन	C_3H_8	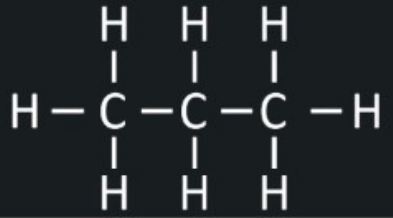

(a) संतृप्त हाइड्रोकार्बन यौगिकों के सूत्र व संरचनाएँ

कार्बन परमाणु	नाम	सूत्र	संरचना
4.	ब्यूटेन	C_4H_{10}	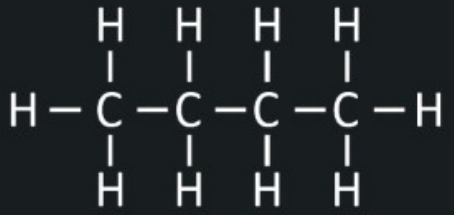
5.	पेन्टेन	C_5H_{12}	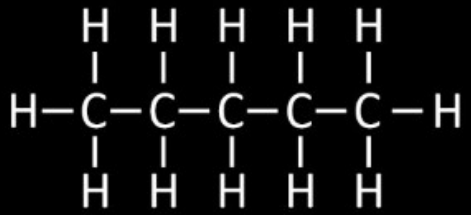
6.	हेक्सेन	C_6H_{14}	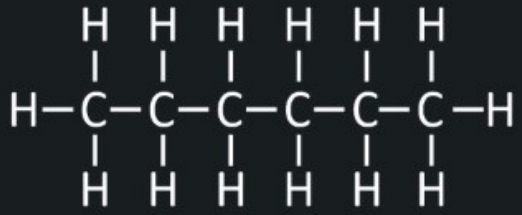

(a) संतृप्त हाइड्रोकार्बन यौगिकों के सूत्र व संरचनाएँ

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

कार्बन परमाणु	नाम	सूत्र	संरचना
7.	साइक्लो हेक्सेन	C_6H_{12}	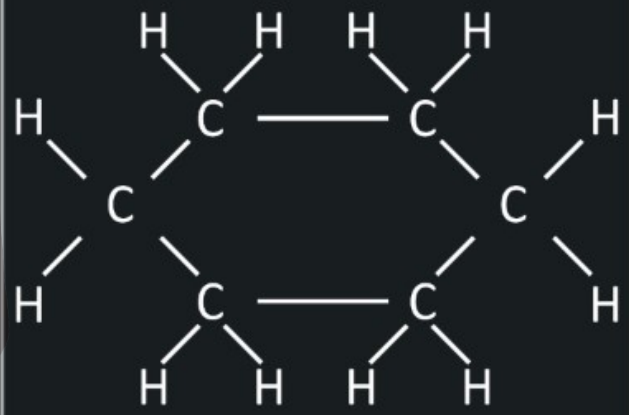

नोट: **संरचनात्मक समावयन**

ऐसे यौगिक जिनके आणविक सूत्र समान लेकिन संरचना अलग-अलग हो।

उदाहरण: C_4H_{10}

